पेपर: हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

अध्याय: हिंदी संस्मरण का विकास

अध्याय लेखक : अवनीश मिश्र

कॉलेज/विभाग : तदर्थ प्राध्यापक, श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

विषय सूची

- विषय प्रवेश
- परिभाषा
- संस्मरण : अन्य गद्य विधाओं से संबंध और अंतर
    - संस्मरण तथा रेखाचित्र
    - संस्मरण तथा जीवनी
    - संस्मरण तथा आत्मकथा
- संस्मरण के तत्व
- हिंदी संस्मरण का इतिहास
- उपसंहार

विषय प्रवेश

साहित्य की दुनिया का अपना पदानुक्रम है। इस पदानुक्रम में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, निबंध आदि को साहित्य की प्रमुख विधाएं माना जाता है और जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तांत, रिपोर्ताज आदि को फुटकर या अन्य गद्य विधाओं की श्रेणी में डाल दिया जाता है। डॉ नगेंद्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' से लेकर डॉ रामचंद्र तिवारी के 'हिंदी का गद्य साहित्य' और दूसरी प्रमुख पुस्तकों तक इन विधाओं को हाशिये का साहित्य समझने की प्रवृत्ति साफ-साफ दिखाई देती है। लेकिन, समय के साथ-साथ फुटकर कोटे में रखी जानेवाली ये विधाएं साहित्य के केंद्रस्थल की ओर बढ़ रही हैं और वर्तमान समय में इनका महत्व साहित्य की परंपरागत केंद्रीय विधाओं से कतई कम नहीं माना जाता है। विगत कुछ वर्षों में इनमें से कुछ गद्य विधाओं ने अपने लिए हिंदी साहित्य में खास मुकाम बनाया है और इनकी चर्चा कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक से कम नहीं हो रही है।

हाशिये से उठकर केंद्र में आनेवाला ऐसा ही एक विधा-रूप है संस्मरण का। बीसवीं सदी की शुरुआत में हिंदी साहित्य में प्रकट होनेवाली यह आधुनिक विधा पश्चिम की देन है। बीसवीं सदी को भारतीय जीवन में बदलाव की सदी कहा जा सकता है। इस सदी में समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, साहित्य- हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन और अभिनव प्रयोग दिखाई देते हैं। इस अभिनव प्रयोगशीलता और बदलाव की प्रेरणा ने साहित्य के क्षेत्र में भी नयी विधाओं के जन्म और विकास में अपनी भूमिका निभाई। पश्चिमी साहित्य के प्रभाव से इस सदी के आरंभ से ही नयी विधाओं का जन्म हुआ, जिनमें संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा तथा यात्रा साहित्य प्रमुख हैं। इसमें दोराय नहीं कि ये विधाएं यूरोपीय साहित्य की देन हैं। इन विधाओं का सूत्र प्राचीन साहित्य में खोजना एक दुराग्रह मात्र कहा जा सकता है।

परिभाषा

संस्मरण अंगरेजी के 'मेमायर्स' शब्द का हिंदी अनुवाद है, जिसका अर्थ है स्मरण के आधार पर लिखा गया साहित्य रूप। संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति सम्+ स्मृ+ ल्युट (अण्) से हुई है, जिसका अर्थ होता है- सम्यक तरीके से अर्थात् भली भांति किया गया स्मरण। सम्यक स्मृति। यानी सहज आत्मीयता तथा गंभीरतापूर्वक किसी व्यक्ति, घटना, दृश्य, वस्तु आदि का पूर्णरूपेण स्मरण करना। स्पष्ट है कि इस विधा का मूल आधार स्मरण या स्मृति है। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार "स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित लेख या ग्रंथ को संस्मरण कह सकते हैं।"

स्मृति की इस महत्ता को स्वीकार करते हुए डॉ नगेंद्र ने संस्मरण को 'वैयक्तिक अनुभव तथा स्मृति से रचा गया इतिवृत्त अथवा वर्णन' कहा है।' (मानविकी पारिभाषिक कोश, संपादक- डॉ नगेंद्र, साहित्य खंड, पृष्ठ-167) "साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में कार्य करनेवाले विख्यात व्यक्ति स्वभावतः जब किसी अन्य महापुरुष अथवा विशिष्टता संपन्न सामान्य पुरुष के संबंध में चर्चा करते हैं, अथवा स्वयं के जीवन के किसी अंश को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करते हैं, तब संस्मरण का जन्म होता है। ये संस्मरण अतीत को सजीव करते हैं।" (हिंदी वांग्मय: बीसवीं सदी, संपादक: डॉ नगेंद्र, पृष्ठ 361)

संस्मरण में संस्मरणकार की स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति या विषय का उसके विशेष काल खंड की परिसीमा में वर्णन होता है। इस आधार पर इसमें इतिहास का भी गुण आ जाता है। लेकिन, संस्मरण इतिहास के निकट होते हुए भी इतिहास नहीं है। यह इतिहास का स्रोत है। इतिहास या इतिहास प्रसिद्ध के जीवन के किसी अंश या पक्ष की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार- "इसमें लेखक अपने समय के इतिहास को लिखना चाहता है, परंतु इतिहासकार के वस्तुपरक रूप से वह बिल्कुल अलग है।

हिंदी संस्मरण का विकास

संस्मरण लेखक जो स्वयं देखता है, जिसका स्वयं अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियां, संवेदनाएं डूबी रहती हैं।'' इस प्रकार हम देखते हैं कि इसमें व्यक्तिपरकता यानी सब्जेक्टिविटी ज्यादा होती है। लेखक, वही लिखना चाहता है, जो वह देखता है। किसी चीज को समग्रता में देखना, उसका पूर्ण चित्र खींचना उसका उद्देश्य नहीं होता है, न ही उससे ऐसी मांग की जाती है।

अर्थात् जब लेखक सहज आत्मीयता तथा गंभीरता से अपने या किसी अन्य व्यक्ति के जीवन में बीती किसी घटना अथवा दृश्य का स्मरण करता है, तो उसे संस्मरण कहते हैं। संस्मरण में अक्सर उन पक्षों के बारे में लिखा जाता है, जिनका जिक्र इतिहास के प्रचलित महावृत्तांत में नहीं होता है। इतिहास व्यक्ति को उसकी सफलताओं और असफलताओं के आईने में देखता है। उसके कार्यो को युग की कसौटियों पर कसता है, जबकि संस्मरण व्यक्ति को उसके समय में स्थित करते हुए भी उसके व्यक्तित्व के पहलुओं पर ज्यादा जोर देता है। उसके जीवन की वे छोटी-मोटी कथाएं कहता हैं, जिन्हें इतिहास छोड़ देता है। संस्मरण में किसी घटना का जिक्र सिर्फ इतिहास की प्रवाह में स्थित एक बिंदु के तौर पर नहीं होता है, बल्कि इसमें उस घटना का आंखों-देखा हाल सुनाया जाता है। इस तरह संस्मरण अतीत का आंखों देखा हाल है, जिसे प्रामाणिकता देने के लिए ग्रंथों या संदर्भों का सहारा नहीं लिया जाता। बल्कि संस्मरण लिखनेवाला ही उसकी प्रामाणिकता के लिए जिम्मेवार होता है। इसलिए इस पर पूरी तरह भरोसा भी नहीं किया जा सकता है। '...संस्मरण को संदेह से देखा जाना चाहिए, उसे संदेह से परे मानने की भूल कतई नहीं करनी चाहिए। (गद्य की पहचान, अरुण प्रकाश, पृष्ठ- 154)

संस्मरण की एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह मूल रूप से किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित करनेवाले व्यक्ति द्वारा अपने समकालीन किसी प्रसिद्ध व्यक्ति पर लिखा जाता है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के अनुसार ''मेमायर्स' (संस्मरण) का रचनाकार ऐसा युग-पुरुष ही हो सकता है, जिसने देश के इतिहास के निर्माण में प्रमुख भूमिका अदा की हो या जिसे इतिहास निर्माण को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ हो।'' संस्मरण लेखक अपने निजी अनुभव को विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा क्रियाकलापों के चित्रण के माध्यम से व्यक्त करता है। उसके वर्णन में अपनी अनुभूतियां, संवेदनाएं भी रहती हैं। इस दृष्टि से शैली में वह निबंधकार के समीप है। संस्मरण लेखक यदि अपने बारे में लिखता है, तो उसकी रचना 'आत्मकथा' के निकट होगी, यदि अन्य व्यक्तियों के विषय में लिखे, तो 'जीवनी' के निकट। इन दो प्रकार के संस्मरणों को अंगरेजी में क्रमशः 'मेमायर्स'/ Memoirs तथा 'रैमिनिसेंसिज'/ Reminiscence कहते हैं। सबसे बड़ी बात है कि संस्मरण में लेखक किसी विषय या व्यक्ति के जीवन के किसी अंश की प्रभावमयी अभिव्यक्ति स्मृति के आधार पर करता है। हिंदी का संस्मरण अंग्रेजी के 'मेमायर' तथा 'रैमिनिसेंसिज' दोनों को आत्मसात किये हुए है। यह कई बार आत्मकथा के भी निकट लगता है, तो कई बार जीवनी के भी। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में 'मेमायर'(संस्मरण) को 'ऑटोबायोग्राफी' (आत्मकथा) का प्रारंभिक रूप माना गया है। इसके अनुसार ऑटोबायोग्राफी के ढंग की रचनाओं के लिए 18वीं सदी के पूर्व 'मेमोरिस' शब्द का प्रयोग किया जा रहा है।

डॉ राजमणि शर्मा के अनुसार, ' हिंदी साहित्य में ऑटोबायोग्राफी ओर 'मेमायर्स' दो भिन्न विधा के रूप में विकसित हुए हैं, जिन्हें क्रमशः 'आत्मकथा' तथा 'संस्मरण साहित्य कहा जाता है। आत्मकथा में संस्मरण की आवश्यकता होती है, लेकिन उसे संस्मरण की संज्ञा देना युक्तिसंगत नहीं लगता। वस्तुतः 'संस्मरण' 'मेमायर्स' का सही प्रतिनिधि है, पर आंशिक मात्र ही। ' (साहित्य के रूप, डॉ राजमणि शर्मा, पृष्ठ- 204)

वस्तुतः ज्यादा सही यह कहना होगा कि हिंदी का संस्मरण अंग्रेजी के मेमायर्स तथा रैमिनिसैंसिज, दोनों को अपने में आत्मसात् किये हुए है। मेमायर्स आत्मकथा के निकट होता है, जबकि रैमिनिसेंसिज जीवनी के निकट।

क्या आप जानते हैं?

छायावाद की प्रमुख कवयित्री महादेवी वर्मा अपने गद्य के लिए भी उतनी ही प्रसिद्ध हैं। हिंदी रेखाचित्र और संस्मरण के विकास में उनका योगदान अप्रतिम है। 'स्मृति की रेखाएं', 'पथ के साथी', और 'अतीत के चलचित्र' उनके संस्मरण और संस्मरणात्मक-रेखाचित्रों का संग्रह है। पथ के साथी में महादेवी वर्मा ने समकालीन साहित्यकारों पर लिखा है, तो अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएं में सामान्य जनों पर।

संस्मरण की विशेषताएं:

1. संस्मरण वर्णन-प्रधान जीवनीपरक कथेतर गद्य विधा है।

2. संस्मरण का आधार स्मृति है।

3. इनमें सजीव पात्रों के बाहरी रूप के साथ-साथ आंतरिक चरित्र का भी वर्णन रहता है।

4. ये कल्पना पर नहीं वास्तविकता पर आधारित होते हैं।

5. संस्मरण लेखक, संस्मरण में अपने निजी अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का लक्ष्य सामने रखता है और अभिव्यक्ति का माध्यम विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं तथा क्रियाकलापों को बनाता है।

6. प्रायः संस्मरण लेखक और स्मरण किया जा रहा व्यक्ति, दोनों प्रसिद्ध होते हैं।

7. संस्मरण में यथार्थ का चित्रण तो होता है, पर वह भावना के रंग में रंगा होता है। यह यथार्थ स्मृति आधारित होता है, इसलिए उसमें इतिहास की धार नहीं होती। न इतिहास की तरह तथ्यपरकता।

8. अपने वर्णन के माध्यम से संस्मरण, संस्मर्ण्य के जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अथवा अब तक अज्ञात ऐसे तथ्य को प्रत्यक्ष करना चाहता है, जो उसके परिवेश और प्रकृति को भी उजागर कर दे।

9. संवेदनात्मक चित्रण संस्मरण के लिए आवश्यक है। यह दो लोगों के बीच आत्मीय रिश्ते या अंतरंगता से पैदा होता है।

इस आधार पर हम संस्मरण को एक विधा के रूप में इन शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं :

" संस्मरण जीवनीपरक कथेतर गद्य विधा है, जिसमें कोई लेखक किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन से जुड़ी मार्मिक आत्मीय स्मृतियों को रोचक और तथ्यपरक ढंग से वर्णित करता है। इस वर्णन में लेखक की अंतरंगता की झलक भी दिखाई देती है। आत्मसंस्मरण अपने जीवन की स्मृतियों से जुड़े चित्र हैं। (साहित्यिक विधाएं : पुनर्विचार, डॉ हरिमोहन, पृष्ठ- 239)

संस्मरण के तत्व

संस्मरण की उपर वर्णित परिभाषा के आधार पर संस्मरण के तत्व निर्धारित किये जा सकते हैं। हमने देखा है कि संस्मरण का आधार स्मृति है। यह स्मृति किसी व्यक्ति से संबंधित होती है, जिसके साथ लेखक की गहरी आत्मीयता या नजदीकी होती है। लेखक इस व्यक्तित्व के किसी पक्ष का या उसके साथ बिताये हुए क्षणों का अंकन पूरी आत्मीयता के साथ करता है। हालांकि वह अपने वर्णन में पूरी तरह से तटस्थ नहीं होता, लेकिन उसे तथ्यों से छेड़छाड़ की इजाजत नहीं होती।

इस आधार पर संस्मरण के चार प्रमुख तत्व माने जा सकते हैं।

1. ***स्मृति:*** अतीत की स्मृति संस्मरण का प्राथमिक तत्व है। संस्मरण का आधार ही स्मृति है। इस विधा में किसी व्यक्ति या स्थान से जुड़ी स्मृतियों को लेखक कागज पर उकेरता है। ये स्मृतियां विशिष्ट होती हैं। ऐसी स्मृतियां, जो किसी स्मृति में आ रहे व्यक्ति के चरित्र के विशिष्ट पहलू को बताती हैं, या लेखक के जीवन से जुड़ी होती हैं। इस मामले में यह स्मृतियों के जंजाल में से विशेष स्मृतियां चुनने का लेखकीय उपक्रम कहा जा सकता है।

2. ***व्यक्तित्व का चित्रण:*** संस्मरण प्रायः किसी व्यक्ति के बारे में लिखा जाता है। हालांकि संस्मरण जगहों और घटनाओं के बारे में भी लिखे गये हैं, लेकिन इन संस्मरणों का आधार भी मुख्यतः व्यक्तियों से जुड़ी स्मृतियां होती हैं। क्योंकि बिना लोगों के स्थान और घटना का कोई महत्व नहीं होता। कोई जगह खुद को लोगों के माध्यम से ही साकार करता है, जिसके संपर्क में लेखक आता है। संस्मरण की विशेषता यह होती है कि यह किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को भले न दिखाता हो, लेकिन उसके व्यक्तित्व के किसी विशिष्ट पहलू को जरूर बताता है। इसी तरह से जब संस्मरणकार अपने संस्मरण के द्वारा किसी शहर को जीवंत करता है, जैसे मनोहर श्याम जोशी ने 'लखनऊ मेरा लखनऊ' में किया है, तो यह काम भी लेखक लोगों के माध्यम से ही करता है।

3. ***आत्मीयता:*** आत्मीयता संस्मरण की अनिवार्य शर्त है। लेखक उसी व्यक्ति के बारे में लिखता है, जिसके साथ उसकी आत्मीयता हो। यह आत्मीयता संस्मरण से झलकनी भी चाहिए। अगर लेखक आत्मीय होकर और पूरी अंतरंगता के साथ किसी व्यक्ति के बारे में नहीं लिखेगा, तो संस्मरण शुष्कता का शिकार हो जायेगा। इसके द्वारा ही संस्मरण विधा विश्वसनीय और पठनीय हो पाती है।

4. ***तथ्यात्मकता:*** जब किसी व्यक्ति, घटना या स्थान के बारे में स्मृति के सहारे लिखा जाता है, तब यह जरूरी होता है कि जो भी लिखा जा रहा है, वह तथ्यपूर्ण हो। कुछ ऐसा न लिखा जाये, तो व्यक्ति को जानबूझकर गलत रौशनी में दिखाए। उसके बारे में

गलत जानकारी दे। इसी तरह से किसी ऐतिहासिक घटना पर लिखते वक्त भी लिखे गये की ऐतिहासिक सत्यता का ध्यान दिया जाना चाहिए।

संस्मरण का वर्गीकरण:

संस्मरण का वर्गीकरण करने की कई कोशिशें होती रही हैं। डॉ मनोरमा शर्मा ने अपनी किताब 'संस्मरण और संस्मरणकार' में संस्मरणों को छह वर्गों में बांटा है।

1. जीवनी प्रधान संस्मरण
2. यात्रा प्रधान संस्मरण
3. शिकार संबंधी संस्मरण
4. ऐतिहासिक संस्मरण
5. सामान्य संस्मरण
6. कलात्मक संस्मरण

इस विभाजन की अपनी समस्याएं हैं। मसलन, जीवनी खुद एक प्रमुख विधा है और यात्रा वृत्तांत भी एक अलग और स्थापित विधा है। संस्मरण का ऐतिहासिक होना उसकी विशेषता है, क्योंकि यह अतीत को स्मृति के आधार पर दर्ज करता है।

शैली के आधार पर भी संस्मरण के भेद किये गये हैं। इसके मुताबिक संस्मरण के नौ भेद हैं-

1. आत्मकथात्मक संस्मरण
2. निबंधात्मक संस्मरण
3. डायरी शैली के संस्मरण
4. पत्रात्मक शैली के संस्मरण
5. तरंग शैली के संस्मरण
6. वर्णनात्मक शैली के संस्मण
7. संवाद शैली के संस्मरण
8. सूक्ति शैली के संस्मरण
9. संबोधन शैली के संस्मरण

इसके अलावा संस्मरण की चित्रात्मक शैली, व्यक्तित्व व्यंजक शैली, संगीत शैली, अलंकारिक शैली, स्वच्छंद शैली आदि कोटि भी बनायी जाती है। (संस्मरण और संस्मरणकार, डॉ मनोरमा शर्मा, पृष्ठ- 98)

श्री शांतिप्रिय द्विवेदी जी की पुस्तक 'परिव्राजक की प्रजा', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की 'अपनी खबर' तथा किशोरीदास वाजपेयी आदि के संस्मरण आत्मकथात्मक संस्मरणों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। राहुल सांकृत्यायन के 'प्रवास के पत्र', प्रेमचंद और जैनेंद्र जी के कुछ संस्मरण पत्रात्मक शैली में लिखे गये हैं। महादेवी वर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी की शैली को चित्रात्मक शैली कहा जा सकता है। श्री हरिवंश राय बच्चन का काश्मीर यात्रा पर और गुलाब राय का कसौली यात्रा पर रोमांचकारी यात्रा संस्मरण उपलब्ध होता है।

लेकिन इस तरह का वर्गीकरण त्रुटि रहित नहीं है। डॉ हरिमोहन लिखते हैं, "कोई भी संस्मरण लेखक अपने लिखे संस्मरण में एक से अधिक शैलियों को अपना कर चल सकता है। या अपने व्यक्तित्व के अनुसार नयी शैली विकसित कर सकता है।" ऐसे में कह सकते हैं कि शैली के आधार पर संस्मरण का वर्गीकरण करना एक तरह से बेमानी है।

डॉ हरिमोहन संस्मरणों को दो वर्गों में रखने का आग्रह करते हैं।

1. चरित्र प्रधान संस्मरण

2. घटना प्रधान संस्मरण

चरित्र प्रधान संस्मरणों में लेखक घटनाओं की अपेक्षा संस्मर्ण्य के बाह्य, आंतरिक चरित्र को अधिक मुखरता के साथ उभारता है, जबकि घटना-प्रधान संस्मरणों में घटनाओं को चरित्र की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाता है। (साहित्यिक विधाएं: पुनर्विचार, डॉ हरिमोहन, पृष्ठ-242-43)

संस्मरण तथा अन्य विधाएं:

संस्मरण तथा रेखाचित्र:

संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर करना काफी मुश्किल है। दोनों की सीमा-रेखा काफी बारीक है और अक्सर इतनी मिली-जुली प्रतीत होती है कि हिंदी साहित्य में संस्मरणात्मक रेखाचित्र नाम की एक अलग विधा ही स्वीकार की जाती है। महादेवी वर्मा की 'स्मृति की रेखाएं' को को इसी वजन पर 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहने का प्रचलन है। डॉ मनोरमा शर्मा लिखती हैं, 'न कोई संस्मरण रचना बिना रेखाचित्र के पूरी हो सकती है और न कोई रेखाचित्र बिना संस्मरण के। यही कारण है कि कुछ रेखाचित्र संस्मरणात्मकता का आभास देते हैं, तो तो संस्मरण रेखाचित्र के समीप हैं। महादेवी वर्मा की रचनाएं इसका प्रमाण हैं। पंत के 'साठ वर्ष' के बारे में भी यही राय है।' लेकिन संस्मरण का क्षेत्र रेखाचित्र से व्यापक है। संस्मरण में सिर्फ कोई व्यक्ति ही लेखन के केंद्र में नहीं होता, बल्कि उसके बहाने उस युग-जीवन को भी अनायास ही चित्रित कर दिया जाता है।

इसलिए संस्मरण पर बात करने से पूर्व संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर समझ लेना, फायदेमंद होगा। रामचंद्र तिवारी लिखते हैं, - "संस्मरण और रेखाचित्र एक दूसरे से मिलती-जुलती गद्य विधाएं हैं। इनका विकास आधुनिक हिंदी गद्य की विशेषता है। संस्मरण किसी स्मर्यमान (स्मरण किये जा रहे) की स्मृति का शब्दांकन है। जिसका स्मरण किया जा रहा है, उसके जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ और वे चारित्रिक विशेषताएं, जो स्मरणकर्ता को याद रह जाते हैं, उन्हें वह अंकित करता है। स्मरण वही रह जाता है जो महत्, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय है। स्मर्यमान को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है। संस्मरण में विषय और विषयि

दोनों दोनों ही रूपायित होते हैं। इसलिए इसमें संस्मरणकर्ता पूर्णतः तटस्थ नहीं रह पाता। वह अपने स्व का पुनः सर्जन करता है।" (हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ- 297)

संस्मरण की परिभाषा के बाद रेखाचित्र की परिभाषा पर दृष्टि डाली जा सकती है। रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण और सजीव अंकन है। अंग्रेजी में जिसे 'स्कैच' कहा जाता है, उसके लिए हिंदी में 'रेखाचित्र', 'व्यक्तिचित्र', शब्दचित्र' शब्दों का प्रयोग होता है। रेखाचित्र में तटस्थता, संक्षिप्तता और तीखापन अधिक होता है। ये ही विशेषताएं ही उसे अन्य साहित्य रूपों से अलग करती हैं। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं तीव्रता में होती है। रेखाचित्र पूर्ण चित्र नहीं है, वह व्यक्ति, वस्तु घटना आदि का एक निश्चित दृष्टि से बिंदु से किया गया प्रतिबिंबन है, जिसमें विवरण कम रहता है, लेकिन तीव्र संवेदना रहती है।

रामचंद्र तिवारी आगे लिखते हैं, 'रेखाचित्र में भी किसी व्यक्ति, वस्तु या संदर्भ का अंकन किया जाता है। यह अंकन पूर्णतः तटस्थ भाव से और निर्लिप्त रहकर किया जाता है। रेखाचित्र में रेखाएं बोलती हैं। जिस प्रकार कुछ थोड़ी सी रेखाओं का प्रयोग करके रेखाचित्रकार किसी व्यक्ति या वस्तु की मूलभूत विशेषता को उभार देता है, उसकी प्रकार कुछ थोड़े से शब्दों का प्रयोग करके साहित्यकार किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी मूलभूत विशेषता के साथ सजीव कर देता है। रेखांकन करते समय वह अपने को तटस्थ रखने की चेष्टा करता है। वस्तु को ही महत्व देता है। जब कभी तटस्थता भंग होती है तो रंगों की चटक में रेखाएं डूब जाती हैं। (हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ- 297)

संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

1. रेखाचित्र उपेक्षित, परिचित और साधारण व्यक्ति के असाधारण व्यक्तित्व पर आधारित होते हैं। जबकि संस्मरण बहुधा परिचित और असाधारण व्यक्ति के असाधारण व्यक्तित्व पर आधारित होते हैं।

2. रेखाचित्र संवेदनात्मक दृष्टि को लेकर लिखा जाता है, लेकिन संस्मरण अक्सर श्रद्धात्मक दृष्टि को लेकर लिखा जाता है।

3. रेखाचित्र समाज के उपेक्षित व्यक्तियों के प्रति करुणा उत्पन्न करने के लिए लिखा जाता है, जबकि संस्मरण समाज में उंचा कद रखनेवाले व्यक्ति के लिए श्रद्धा जगाने के लिए लिखा जाता है।

संस्मरण तथा जीवनी

संस्मरण और जीवनी के बीच समानता कई बिंदुओं पर पायी जाती है। हम कह सकते हैं कि संस्मरण जीवनी के लिए दुर्लभ सामग्री जुटानेवाली साहित्यिक विधा है। दोनों विधाएं ही व्यक्ति-प्रधान हैं, परंतु स्वरूप की दृष्टि से दोनों में अंतर है। संस्मरण मानव जीवन को समग्रता में प्रतिबिंबित नहीं करता जबकि जीवनीकार उसके सारे विस्तार को समेटता है। वैसे तो संस्मरण एक दृष्टि में जीवनी का ही संक्षिप्त रूप लग सकता है, लेकिन दोनों में अंतर स्पष्ट हैं। यह अंतर रचना प्रक्रिया के स्तर पर भी है और वस्तु और शैली के स्तर पर भी। पहला और महत्वपूर्ण अंतर तो यही है कि संस्मरण उन व्यक्तियों पर ही लिखा जाता है, जिनसे लेखक न सिर्फ मिल चुका होता है, बल्कि उनसे निकट का संपर्क भी होता है। जबकि जीवनी लेखन के लिए ऐसा कतई जरूरी नहीं है। दुनिया की ऐसी अनेकों श्रेष्ठ जीवनियों ऐसे व्यक्तित्वों पर लिखी गयी हैं, जिनसे लेखक न पहले मिला था, न ही जीवनी लिखते वक्त वे जीवित ही थे। ऐसी जीवनियां आज भी लिखी जा रही हैं। हिंदी में विष्णु प्रभाकर द्वारा बांग्ला उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी 'आवारा मसीहा' इसका जीता-जागता उदाहरण कहा जा सकता है। जीवनी को पुस्तकों, संस्मरणों, पत्रों, लेखों, उपलब्ध विवरणों, वंशजों और चरित नायक के परिचित व्यक्तियों से उपलब्ध सामग्री और उनके कथनों के आधार पर लिखा जाता है। इस प्रकार जीवनी लेखन एक

शोधपरक काम है। जबकि संस्मरण हमेशा वैसे चरित्रों का लिखा जाता है, जिनसे लेखक मिला हो, बातचीत की हो और उससे, उसका घनिष्ठ संबंध रहा हो। यही कारण है कि संस्मरणों में तारीख या समय पर ध्यान नहीं दिया जाता, जबकि जीवनी लिखते समय इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

इस तरह देखें, तो जीवनी में वस्तुपरकता, संस्मरण की तुलना में ज्यादा होती है। साथ ही जीवनी लेखक, ज्यादा निरपेक्ष भाव से किसी चरित्र के बारे में लिखता है। इसमें शोधपूर्वक जमा किये गये ब्यौरों का महत्व कहीं ज्यादा होता है। तटस्थता जीवनी लेखन की पहली शर्त है। जबकि संस्मरण का लेखक तटस्थता का दावा नहीं करता। जीवनी लेखक, जीवनी में गायब रहता है। उसका 'मैं' जीवनी पर हावी नहीं होता। जबकि संस्मरण में केंद्र में 'मैं' होता है। क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति के उन क्षणों को याद किया जाता है, जिसमें मैं की भूमिका होती है। जीवनी में किसी व्यक्ति के जीवन की पूरी और क्रमवार कथा होती है, उसकी अच्छाई-बुराई सबका अंकन होता है। जबकि संस्मरण में ऐसे किसी क्रम की परवाह नहीं की जाती। यह किसी व्यक्ति के जीवन से जुड़े कुछ रोचक प्रसंगों तक ही सीमित रहता है। साथ ही इसमें तटस्थता का भी दावा नहीं होता। लेखक अपनी मर्जी से किसी व्यक्ति के जीवन के चित्रों को चुनता है। 'पथ के साथी' के 'दो शब्द' में महादेवी वर्मा ने लिखा है, "अपने अग्रजों सहयोगियों के सम्बन्ध में, अपने-आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता। मैंने साहस तो किया है पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगता मेरे लिए संभव नहीं है। मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते हैं, उससे वे बहुत उज्ज्वल और विशाल हैं, इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे।" इससे यह स्पष्ट होता है कि इतिहास जैसी तटस्थता संस्मरण में मुमकिन नहीं है।

संस्मरण तथा आत्मकथा

एक तरह से देखें, तो संस्मरण आर आत्मकथा, दोनों ही जीवन में पीछे की ओर मुड़कर देखनेवाली विधाएं हैं। आत्मनिष्ठता और स्मृति तत्व दोनों में ही प्रमुख होता है। लेकिन इतने से ही दोनों समान नहीं हो जातीं। संस्मरण में लेखक अपनी निगाहों से किसी और के जीवन को देखता है। इस देखने में है, उसका अपना जीवन भी चला आता है। जबकि आत्मकथा में वह अपनी निगाहों से खुद को देखता है। आत्मकथा में पूर्णता होती है। यह पूरे जीवन का लेखा-जोखा होता है, जबकि संस्मरण के लिए पूर्णता कोई शर्त नहीं है।

संस्मरण किसी के जीवन के किसी दौर या वक्फे को पकड़ता है। संस्मरण में लेखक की दृष्टि चयनात्मक होता है। वह उन्हीं क्षणों को याद करता है, जिसे वह याद करना चाहता है। लेकिन आत्मकथा में लेखक को अपने पूरे जीवन को क्रमवार रूप से प्रकट करना होता है। संस्मरण, अपनी आत्मकथा का कच्चा माल है और किसी की जीवनी के लिए स्रोत सामग्री है। अरुण प्रकाश के मुताबिक़ "संस्मरण भी आत्मकथा ही है, अलबत्ता वह समग्र आत्मकथा के मुकाबले छोटा होता है। संस्मरण में अतीत के ख़ास क्षणों, मोड़ों को फिर से जीवित करने की कोशिश होती है। (गद्य की पहचान, अरुण प्रकाश, पृष्ठ- 152)

संस्मरण का इतिहास

प्रायः प्रत्येक नयी विधा अपने आगमन की घोषणा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही करती है। संस्मरण साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। हिंदी संस्मरण साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप 'सरस्वती', 'माधुरी', 'सुधा', 'विशाल भारत', 'हंस' जैसी पत्रिकाओं से उपलब्ध होता है। हालांकि डॉ मनोरमा शर्मा भारतेंदु युग से ही संस्मरण का प्रारंभ मानती हैं। कुछ विद्वान बालमुकुंद गुप्त द्वारा सन् 1907 में प्रतापनारायण मिश्र पर लिखे संस्मरण को हिंदी का प्रथम संस्मरण मानते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि संस्मरण साहित्य की शुरुआत द्विवेदी युग से पहले नहीं हुई। असल और कलात्मक संस्मरण द्विवेदी युग के बाद ही दिखते हैं। यहाँ हम द्विवेदी युग से औपचारिक रूप से शुरू होनेवाली संस्मरण विधा के संक्षिप्त इतिहास पर एक नजर डाल सकते हैं।

द्विवेदी युग:

इसमें दोराय नहीं कि संस्मरण विधा का आरंभ द्विवेदी युग से पहले नहीं हुआ। 'सरस्वती' इस युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्रिका थी और संस्मरण साहित्य ने इसके माध्यम से ही अपने आगमन की सूचना दी। इसके विभिन्न अंकों में स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'अनुमोदन का अंत' (फरवरी, 1905), सभा की सभ्यता (अप्रैल, 1907), 'विज्ञानाचार्य बसु का विज्ञान मंदिर' (जनवरी, 1918), आदि की रचना करके संस्मरण साहित्य की श्रीवृद्धि की। (हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक, डॉ नगेंद्र- पृष्ठ-522) सरस्वती के अंकों में महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त रामकुमार खेमका, जगद्विहारी सेठ, पांडुरंग खानखोजे, प्यारेलाल मिश्र, काशीप्रसाद जायसवाल, जगन्नाथ खन्ना, भोलादत्त पांडेय आदि द्वारा लिखे संस्मरण भी प्रकाशित हुए। आलोच्य युग में प्रकाशित अधिकांश संस्मरण प्रवासी भारतीयों द्वारा लिखे गये और प्रायः सभी का अभीष्ट भारतीय पाठकों को पश्चिम की रीति-नीतियों और दर्शनीय स्थलों आदि से परिचित करना था। यही कारण है कि इनकी शैली अनेक स्थलों पर निबंधात्मक हो गयी है। पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित संस्मरण साहित्य की दृष्टि से 'हरिऔध जी के संस्मरण' ही इस युग की उल्लेखनीय कृति है। इसके लेखक बालमुकुंद गुप्त हैं। (हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक, डॉ नगेंद्र- पृष्ठ-523)

छायावाद युग:

आलोच्य युग में संस्मरणों तथा रेखाचित्रों की पर्याप्त परिमाण में रचना की गयी। संस्मरण तो इस युग के पूर्व भी लिखे गये थे, किंतु रेखाचित्रों की रचना इसी काल में हुई। जहां तक संस्मरणों का संबंध है, पूर्ववर्ती युग के समान इस युग में भी पत्र-पत्रिकाओं ने ही इसकी श्रीवृद्धि में सर्वाधिक योगदान दिया। सरस्वती में रामकुमार खेमका, कृपानाथ मिश्र, रामनारायण मिश्र, भगवानदीन दुबे, रामेश्वरी नेहरू, श्रीमन्नारायण अग्रवाल आदि के अनेक यात्रावृत्तांतमूलक संस्मरण प्रकाशित हुए, जिनसे देश-विदेश के जीवन के विविध पक्षों, दर्शनीय स्थानों, प्राकृतिक सौंदर्य आदि का वर्णन विवरणपरक भावनात्मक शैली में रोचक ढंग से किया गया। 'विशाल भारत', सुधा और 'माधुरी' में भी कई उल्लेखनीय संस्मरण प्रकाशित हुए। आचार्य रामदेव, अमृतलाल चक्रवर्ती, बनारसीदास चतुर्वेदी, मंगलदेव शर्मा जैसे लेखकों ने इन पत्रिकाओं के लिए क्रमशः स्वामी श्रद्धानंद, बालमुकुंद गुप्त, श्रीधर पाठक और पद्मसिंह शर्मा से संबंद्ध जीवनीपरक संस्मरणों की रचना की। 'सुधा' (1921) में प्रकाशित इलाचंद्र जोशी कृत 'मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृतियां' तथा वृंदावनलाल वर्मा कृत 'कुछ संस्मरण' भी उल्लेखनीय रचनाएं हैं। पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री के अतिरिक्त इस अवधि में संस्मरणों के कतिपय संकलन भी प्रकाशित हुए, जिनमें शिवराम पांडेय, श्रीराम शर्मा, मन्मथनाथ गुप्त तथा शिवनारायण टंडन द्वारा क्रमशः रचित 'मदन मोहन के संबंध की 'कुछ पुरानी स्मृतियां' (1932), 'शिकार' (1936), 'क्रांति-युग के संस्मरण' (1937) और 'झलक' (1938) उल्लेखनीय हैं। इनमें से अंतिम कृति में हरिऔध जी के जीवन की कुछ स्मृतियां दी गयी हैं। हिंदी संस्मरण-परंपरा के प्रारंभिक उन्नायकों में पद्मसिंह शर्मा, राधिकारमण सिंह तथा श्रीराम शर्मा का नाम महत्वपूर्ण है। पद्म सिंह शर्मा संस्मरण परंपरा के जनक माने जाते हैं। इनके संस्मरण 'पद्म पराग' (1929) में संकलित हैं। राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह के संस्मरण 'सावनी समां', 'वे और हम', 'तब और अब', 'टूटा तारा' आदि संग्रहों में संकलित हैं। श्रीराम शर्मा के संस्मरण 'शिकार', 'बोलती प्रतिमा', तथा 'सन बयालीस के संस्मरण' आदि रचनाओं में मिलते हैं। 'बोलती प्रतिमा' में संकलित संस्मरणों को रेखाचित्र के करीब माना जा सकता है। बाबूराव विष्णुराव पड़ारकर द्वारा संपादित 'हंस' का प्रेमचंद स्मृति अंक (1937) तथा ज्योतिलाल भार्गव द्वारा संपादित साहित्यिकों के संस्मरण भी इसी युग की उल्लेखनीय रचनाएं हैं। (हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक- डॉ नगेंद्र, पृष्ठ- 597)। शिवरानी प्रेमचंद का 'प्रेमचंद घर में'(1944) का महत्व भी संस्मरण की दुनिया में निर्विवाद है। महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का प्रकाशन भी इसी काल में शुरू हो चुका था। 'समग्रतः आलोच्य युग में संस्मरणों और रेखाचित्रों में कथ्य औपर शिल्प दोनों ही दृष्टियों से पर्याप्त वैविध्य दृष्टिगत होता है। कथ्य की दृष्टि से संस्मरण साहित्य में जहां समाजसेवी नेताओं, साहित्यकारों तथा प्रवासी भारतीयों के स्मृति

प्रसंगों को रोचक एवं प्रवाहपूर्ण शैली में प्रस्तुत करके पाठक को कर्मक्षेत्र में अग्रसर होने की प्रेरणा दी गयी है, वहीं रेखाचित्रों में समाज के उपेक्षित व्यक्तियों के चित्रण पर बल दिया गया है। (हिंदी साहित्य का इतिहास, संपादक- डॉ नगेंद्र, पृष्ठ-597)

छायावादोत्तर युग :

संस्मरण विधा के प्रतिष्ठापकों में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी तथा रामवृक्ष बेनीपुरी के नाम अग्रगण्य हैं। पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी की दो संस्मरण कृतियां हैं- 'हमारे आराध्य' तथा 'संस्मरण'। रामवृक्ष बेनीपुरी की विशेष ख्याति उनके संस्मरणों के कारण भी है। 'माटी की मूरतें, 'मील के पत्थर', जंजीरें और दीवारें' आदि रचनाओं में इन्होंने स्वानुभूतियों को अंकित किया है। (आधुनिक हिंदी गद्य, रवेलचंद्र आनंद, पृष्ठ-140)।

महादेवी वर्मा के संस्मरण रेखाचित्र और संस्मरण का मिला-जुला रूप हैं। 'स्मृति की रेखाएं' और 'अतीत के चलचित्र' उनके संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं। पथ के साथी में उन्होंने कुछ प्रमुख समकालीन साहित्यिक हस्तियों के संस्मरण लिखे हैं। पथ के साथी में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मैथलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, सुभद्राकुमारी चैहान तथा सियारामशरण गुप्त के उत्कृष्ट शब्द-चित्र हैं। राहुल सांकृत्यायन के जीवनीपरक साहित्य की भी इस विधा में अनुपम देन है। 'बचपन की स्मृतियां', 'मेरे असहयोग के साथी' तथा जिनका मैं कृतज्ञ' उनके तीन संस्मरण संग्रह हैं। उनके संस्मरणों में पर्याप्त वैविध्य दिखाई पड़ता है। राहुल सांकृत्यायन की भांति भदन्त आनंन्द कौसल्यायन ने विविधोन्मुखी संस्मरण लिखे हैं। 'जो न भूल सका', 'जो लिखना पड़ा', 'रेल टिकट', 'देश की मिट्टी बुलाती है', 'एक गांव अनेक युग' आदि रचनाओं में उनके संस्मरण संकलित हैं। 'साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण रचना में किशोरीदास वाजपेयी के संस्मरण प्राप्त होते हैं। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के 'वातायन' में रेखाचित्र एवं संस्मरण संकलित हैं।

काका कालेलकर (संस्मरणयात्रा), गुलाब राय (मेरी असफलताएं), विनोदशंकर व्यास (प्रसाद और उनके समकालीन), माखनलाल चतुर्वेदी (समय के पांव), शांतिप्रिय द्विवेदी (पथचिह्न (1946), स्मृतियां और कृतियां), जैनेंद्र (गांधी कुछ स्मृतियां, ये और वे), जानकी वल्लभ शास्त्री (स्मृति के वातायन), शिवपूज सहाय (वे दिन वे लोग), प्रकाशचंद्र गुप्त (मिट्टी के पुतले), रामनरेश त्रिपाठी (तीस दिन: मालवीय जी के साथ) आदि इस युग के प्रमुख संस्मरणकार कहे जा सकते हैं।

देवेंद्र सत्यार्थी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (जिंदगी मुस्कराई), उपेंद्रनाथ अश्क (मंटो मेरा दुश्मन, ज्यादा अपनी, कम परायी), डॉ नगेंद्र (चेना के बिंब), जगदीश चंद्र माथुर (दस तस्वीरें, जिन्होंने जीना जाना), रामधारी सिंह दिनकर (लोकदेव नेहरू), हरिवंशराय बच्चन (नये-पुराने झरोखे), अमृत लाल नागर (जिनके साथ जिया), कृष्णा सोबती (हम हशमत), भारतभूषण अग्रवाल (लीक-अलीक), डॉ

> "अपने अग्रजों सहयोगियों के सम्बन्ध में, अपने-आप को दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता। मैंने साहस तो किया है, पर ऐसे स्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगता मेरे लिए संभव नहीं है। मेरी दृष्टि के सीमित शीशे में वे जैसे दिखाई देते हैं, उससे वे बहुत उज्जवल और विशाल हैं, इसे मानकर पढ़ने वाले ही उनकी कुछ झलक पा सकेंगे।"
>
> *महादेवी वर्मा, पथ के साथी*

रामकुमार वर्मा (संस्मरणों के सुमन), विष्णु प्रभाकर (मेरे अग्रज: मेरे मीत), फणीश्वरनाथ रेणु (वन तुलसी की गंध) आदि इस युग में संस्मरण या संस्मरणात्मक रेखाचित्र में योगदान देनेवाले प्रमुख साहित्यकार हैं। अरुण प्रकाश कहते हैं, 'इन संस्मरणों को खंगालने से साफ हो जाता है कि संस्मरण के केंद्र में 'विशिष्ट' ही रहे, चाहे वे लेखक हों या राजनेता। तीन ऐसी पुस्तकें हैं, जो मामूली लोगों के बारे में हैं। कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, श्रीराम शर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी ने आम लोगों के बारे में लिखा है और संयोग से ये तीनों पत्रकार थे। ये आम लोगों का महत्व समझ रहे थे, जबकि शुद्ध साहित्यिक संस्मरण लेखक विशिष्टों को संस्मरण के योग्य मान रहे थे।" (गद्य की पहचान, अरुण प्रकाश, पृष्ठ-161)

संस्मरण साहित्य के उन्नायक: रामवृक्ष बेनीपुरी

संस्मरण साहित्य को विकसित करनेवालों में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम अग्रगण्य है। 'लालतारा'(1938), माटी की मूरतें (1946), गेहूं और गुलाब (1950), मील के पत्थर, जंजीरें और दीवारें आदि रचनाओं के बल पर वे हिंदी के श्रेष्ठ संस्मरणकारों में गिने जाते हैं। 'पैरों में पंख बांधकर' आपके यात्रा संस्मरणों की डायरी है। आपकी 'माटी की मूरतें का अनुवाद साहित्य अकादमी द्वारा सभी भारतीय भाषाओं में हो चुका है। इसमें कथात्मक सौंदर्य से सुसज्जित संस्मरण हैं, तो 'लालतारा' में क्रांति की ज्वाला उगलनेवाले स्मृति-चित्र विद्यमान हैं। 'जंजीरें और दीवारें' में उनके जेल जीवन के संस्मरण हैं।

उत्तरवर्ती युग:

बाद के समय में संस्मरण के क्षेत्र में कई कृतियां काफी लोकप्रिय और चर्चित रहीं। इनमें अज्ञेय का 'स्मृतिलेखा', हरिशंकर परसाई का 'तिरछी , रेखाएं' राजेंद्र यादव का 'मुड़ मुड़ के देखता हूं', ' वे देवता नहीं हैं', 'औरों के बहाने', कमलेश्वर का बारह भारतीय रचनाकारों के जीवन के बेहद निजी शब्द-चित्र 'मेरा हमदम, मेरा दोस्त', मन्नू भंडारी का 'एक कहानी यह भी', मनोहर श्याम जोशी का 'लखनऊ मेरा लखनऊ', काशीनाथ सिंह के संस्मरण 'याद हो कि न याद हो', 'आछे दिन पाछे गए', 'घर का जोगी जोगड़ा', जिसमें उन्होंने अपने बड़े भाई और वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह के जीवन संघर्षों का स्मरण किया है, नरेंद्र कोहली का 'स्मरामि', रामशरण जोशी का 'प्रतिबिंबन: व्यक्ति, विचार और समाज', ममता कालिया का कितनी शहरों में कितनी बार, हाल ही में प्रकाशित 'कल परसों के बरसों', रवींद्र कालिया का 'गालिब छूटी शराब', 'सृजन के सहयात्री', 'कामरेड मोनालिसा', दूधनाथ सिंह का 'लौट आ ओ धार', विश्वनाथ त्रिपाठी का 'गंगा स्नान करने चलोगे क्या' 'नंगा तलाई का गांव', जिसे स्मृति आख्यान कहा गया है, स्वयंप्रकाश का 'हमसफरनामा', नीलाभ का 'ज्ञानरंजन के बहाने', ज्ञानरंजन का 'तारामंडल के नीचे एक आवारागर्द और अन्य संस्मरण, शिवमूर्ति का 'सृजन का रसायन', कांतिकुमार जैन का 'लौट कर आना नहीं होगा', 'जो कहूंगा, सच कहूंगा'' अजित कुमार का 'निकट मन में', अमृत राय का 'जिनकी याद हमेशा रहेगी', विष्णुकान्त शास्त्री का 'सुधियां उस चन्दन के वन की', गिरिराज किशोर का 'सप्तवर्णी', देवेन्द्र सत्यार्थी का 'यादों के काफिले', रामदरश मिश्र का 'अपने-अपने रास्ते' चन्द्रकान्ता का 'मेरे भोजपत्र' आदि अनेकानेक संस्मरण इस बात के प्रमाण हैं कि संस्मरण की विधा वर्तमान समय में न सिर्फ आगे बढ़ रही है, बल्कि बाकी साहित्यिक विधाओं को लोकप्रियता के मामले में अच्छी खासी चुनौती भी दे रही है।

परवर्ती युग के कुछ महत्वपूर्ण संस्मरण:

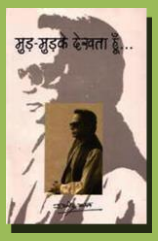

सबसे बड़ी बात यह है कि संस्मरण साहित्य ने लगातार अपना फॉर्म तोड़ा और अपनी सीमाओं का विस्तार किया है। विगत दो दशकों में श्रद्धामूलक भाव से मुक्ति की कोशिशों ने इसे विवादप्रिय और लोकप्रिय दोनों बनाया है। अरुण प्रकाश ने इन लेखकों के संस्मरण के बारे में एक महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान दिलाया है। यह पूर्ववर्ती संस्मरणों से साठ-सत्तर के दशक के बाद के संस्मरणों के एक महत्वपूर्ण अंतर को बताता है। वे कहते हैं, "अज्ञेय, कमलेश्वर, काशीनाथ सिंह, राजेंद्र यादव कांतिकुमार जैन साहसी संस्मरण लेखकों में गिने जायेंगे। इन सबने जीवित विशिष्ट जनों पर लिखा है। खण्डन-मंडन, प्रतिशोध और वैर झेला और झमेले से बच निकलने की कलाबाजी नहीं दिखायी।" (गद्य की पहचान, अरुण प्रकाश, पृष्ठ- 159)

उपसंहार

आजादी के बाद के हिंदी साहित्य के परिदृश्य में जिन विधाओं ने लगातार अपने लिए स्थान बनाया है, उनमें संस्मरण संभवतः सबसे उल्लेखनीय है। यही वजह है कि कई बार आलोचकों को इस बात पर हैरत प्रकट करते हुए भी देखा जा सकता है कि आखिर इस विधा के विस्फोट के पीछे कौन सी शक्तियां काम कर रही हैं? कारण जो भी हो, यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि संस्मरण ने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में महत्वपूर्ण काम किया है और खुद भी हाशिये से उठकर साहित्य के केंद्र में स्थापित हो चुका है। हालांकि संस्मरणों ने कई बार विवादों को भी जन्म दिया है, लेकिन साहित्य-समय की धड़कनों को पकड़ने में यह विधा कामयाब हुई है।

हिंदी संस्मरणों की सूची के लिए इस लिंक पर जाएँ.

http://hindisahityavimarsh.blogspot.in/2014/11/blog-post.html

कुछ महत्वपूर्ण संस्मरण कृतियों को पढने के लिए इस लिंक पर जाएँ.

http://www.hindisamay.com/content.aspx?id=18

स्व-मूल्यांकन प्रश्नमाला

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१- एक स्वतंत्र विधा के तौर पर संस्मरण की शुरुआत किस युग में हुई?

क- द्विवेदी युग

ख- भारतेंदु युग

ग- छायावाद युग

घ- छायावादोत्तर युग

२- 'मुड़-मुड़ कर देखता' हूं संस्मरण के लेखक कौन हैं?

क - राजेंद्र यादव

ख - कमलेश्वर

ग - अज्ञेय

घ- निर्मल वर्मा

३- 'हम हशमत' किसका संस्मरण है?

क- उषा प्रियंवदा

ख- मन्नू भंडारी

ग- कृष्णा सोबती

घ- नासिरा शर्मा

४- 'माटी की मूरतें' संस्मरण के लेखक कौन हैं?

क- रामवृक्ष बेनीपुरी

ख- शिवपूजन सहाय

ग- रामधारी सिंह दिनकर

घ- रामनरेश त्रिपाठी

५- संस्मरण विधा का विकास किस पत्रिका के पन्नों पर हुआ?

क - सरस्वती

ख- माधुरी

ग - सुधा

घ - हंस

६- 'ग़ालिब छूटी शराब' के लेखक कौन हैं?

क. रवीन्द्र कालिया
ख. ज्ञानरंजन
ग. राजेन्द्र यादव
घ. अब्दुल बिस्मिल्लाह

७- बाल्मुकुंद गुप्त द्वारा किस साहित्यिक शख्सियत पर लिखा गया संस्मरण हिंदी का पहला संस्मरण माना जाता है?

क. भारतेंदु हरिश्चंद्र
ख. महावीर प्रसाद द्विवेदी
ग.मैथिलीशरण गुप्त
घ. प्रताप नारायण मिश्र

८. घर का जोगी जोगड़ा में काशीनाथ सिंह ने किसके जीवन संघर्ष को याद किया है?

क. दूधनाथ सिंह
ख. नामवर सिंह
ग. शिवप्रसाद सिंह
घ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

सही उत्तर- १-(क), २-(क), ३-(ग), ४-(क), ५-(क), ६-(क), ७-(घ), ८-(ख),

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

१- संस्मरण की परिभाषा देते हुए इसकी अन्य प्रमुख कथेतर गद्य विधाओं से तुलना कीजिये।
२- हिंदी साहित्य में संस्मरण विधा हाशिये से उठ कर केंद्र की और आ रही है. उदाहरण के साथ बताइये।
३- संस्मरण की परिभाषा देते हुए हिंदी संस्मरण की विकास-कथा संक्षेप में लिखिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

१- हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
२- हिंदी साहित्य का इतिहास, सम्पादक- डॉ नागेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली
३- गद्य की पहचान, अरुण प्रकाश, अंतिका प्रकाशन
४- साहित्यिक विधाएं : पुनर्विचार, डॉ हरिमोहन, वाणी प्रकाशन
५- साहित्य के रूप, राजमणि शर्मा, ठाकुर प्रसाद संस, वाराणसी
६- समीक्षा और साहित्य की विधाएं, डॉ हरिमोहन, सरिता बुक्स हाउस, दिल्ली
७- संस्मरण और संस्मरणकार, डॉ मनोरमा शर्मा, आराधना ब्रदर्स, कानपुर
८- आधुनिक हिंदी गद्य, सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६

कोश

१- हिंदी साहित्य कोश
२- मानविकी परिभाषा कोश
३- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका
४- हिंदी वांग्मय, सम्पादक : डॉ नगेन्द्र

UNIVERSITY OF DELHI